इस मास में विशेषः साधना दीक्षा

पारद गणपति प्रयोग

24 जुलाई, संकष्टी गणेश चतुर्थी

धन की आकांक्षा, इच्छा किसे नहीं होती, चाहे वह गृहस्थ हो अथवा योगी, यति हो, देवता हो अथवा दानव हो, सब महालक्ष्मी की साधना में तत्पर हो जाते हैं। लेकिन यह तथ्य जानना आवश्यक है कि महालक्ष्मी तभी सिद्ध होती है जब घर में गणपती की पूजा सम्पन्न की जाती है एवं स्मरण किया जाता है। लक्ष्मी का स्वरूप ऋद्धि-सिद्धि तो गणपति की भार्याएं हैं और शुभ-लाभ उनके पुत्र हैं और विशेष बात यह है कि माहेश्वरी, गौरी, पार्वती उनकी माँ है तथा देवाधिदेव महादेव उनके पिता हैं। इन सब की आराधना-साधना गणपति पूजा से ही प्रारम्भ होती है तथा सिद्ध भी होती हैं। गुरू साधना में सफलता भी गणपति पूजा से ही प्रारम्भ होती है।

दैत्यसूदनाय श्री कार्तिकेय प्रयोग

02 अगस्त, मासिक शिवरात्रि

किसी घर या किसी व्यक्ति के ऊपर जब भी तंत्र बाधा प्रभाव होता है, तो उस व्यक्ति के जीवन में सर्वनाशकीय दशा सामने आती है। उससे प्रभावित व्यक्ति चाहे वह लखपति या करोड़पति ही क्यों न हो, दीन-हीन और दरिद्र बन जाता है। घर में तनाव, कलह विवाद और अशान्ति का वातावरण बना रहता है, मान-प्रतिष्ठा, यश सभी धूल में मिल जाते हैं। हँसता-खेलता जीवन बर्बाद हो जाता है। दैत्यसूदनाय श्री कार्तिकेय का तात्पर्य है, खड़ी एवं क्रोध मुद्रा में शत्रुसंहार रूप में कार्तिकेय। कार्तिकेय जी के इस रूप का प्रयोग सम्पन्न करने से साधकों की समस्त तंत्र बाधाओं का नाश होता है तथा शत्रु का संहार होता है।

स्वर्णावती अप्सरा साधना

04 अगस्त, हरियाली अमावस्या

जिस प्रकार अन्य साधनाएं महत्त्वपूर्ण हैं, उसी प्रकार साधक के जीवन में सौन्दर्य साधनाओं का भी विशेष महत्त्व है, क्योंकि जिस मनुष्य में रस नहीं है, प्रेम नहीं है वह अन्य किसी साधना में भी सफल नहीं हो सकता है। इस आपाधापी, तनाव, हताशा, निराशा आदि से भरे हुए युग में व्यक्ति प्रेम और कोमलता को भूल सा गया है। जबकी प्रेम तो जीवन का आवश्यक अंग है और विशुद्ध प्रेम साकार होता है अप्सरा साधना के माध्यम से। स्वर्णावती अप्सरा साधक के जीवन में एक नयी उमंग और यौवन के समान कोमलता ले आती है जिससे कि वह हमेशा ही प्रसन्नतामय दिखता है।

पद्मावती धनदात्री प्रयोग

16 अगस्त, वरलक्ष्मी व्रत पर्व

भारत में जैन धर्म एक ऐसा धर्म है, जिसमें प्रायः सभी लोग सम्पन्न, धनाढ्य, समाज में सुस्थापित और धन-धान्य से परिपूर्ण मिलेंगे। जैनियों में बहुत कम ऐसे लोग मिलेंगे जो अर्थाभाव अथवा अभाव में जीवन यापन कर रहे हों। कारण यही है कि जैन धर्म में देवी पद्मावती की पूजा, साधना का विशेष प्रचलन है। देवी पद्मावती जैन धर्म में धन, सम्पन्नता, वैभव एवं ऐश्वर्य की देवी हैं। इनकी साधना कोई भी साधक कर अपने जीवन में अर्थाभाव को हमेशा के लिए समाप्त कर सकता है। इसकी विधि-विधान सहित साधना प्रयोग साधकों के जीवन के लिए वरदान है।

साधना एक साधक के जीवन का अभिन्न अंग है, जो साधक समय-समय पर स्वयं व सामूहिक रूप से साधना सम्पन्न करते हैं, वे सदैव सद्गुरूदेव के हृदय में एक विशिष्ट स्थान प्राप्त करते हैं। ये विशिष्ट साधनायें सम्पन्न करने के लिए कैलाश सिद्धाश्रम में सम्पर्क करें।